डॉ. विजय कुमार उपाध्याय

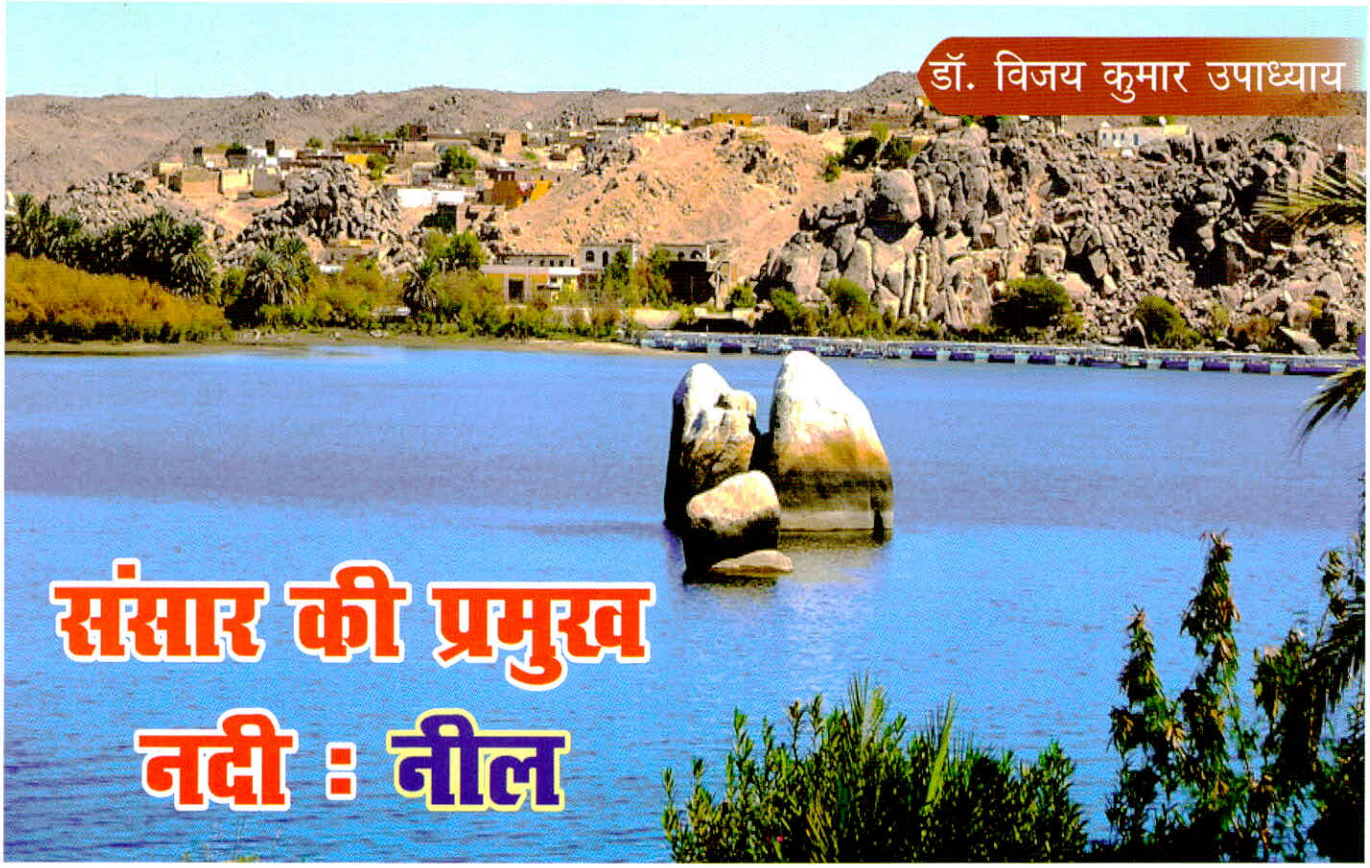

संसार की प्रमुख नदी : नील

'नील' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द 'निलौस' से हुई है, जिसका अर्थ है 'घाटी' या 'नदी घाटी'। प्राचीन काल के दौरान मिस्र के लोग इस नदी को अर् या और (Aur) कहते थे, जिसका अर्थ होता है 'काला' अथवा 'नीला'। इस नदी का ऐसा नाम रखे जाने का कारण यह था कि इस नदी द्वारा बाढ़ के समय ढोकर लाये जाने वाले अवसाद (सेडिमेंट) का रंग नीला रहता था। इस नदी द्वारा लाया गया काला या नीला अवसाद इस पूरे क्षेत्र में फैल जाता था। इसके कारण पूरा क्षेत्र नीले या काले रंग का दिखाई पड़ता था।

नील नदी अफ्रीका महाद्वीप की सभी नदियों की जननी तथा संसार की सबसे लम्बी नदी है। इसका उद्भव विषुवत रेखा के दक्षिण में होता है तथा यह उत्तर दिशा की ओर प्रवाहित होती हुई अन्त में भूमध्य सागर में मिल जाती है। इस नदी की कुल लम्बाई लगभग 6650 किलोमीटर है। यह नदी अफ्रीका महाद्वीप के अनेक देशों से गुजरती है तथा वहां के लोगों के लिये जीवन रेखा का काम करती है। ऐसे देशों में शामिल हैं तंजानिया, बुरूण्डी, रोआंडा, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो, केनिया, उगांडा, दक्षिणी सूडान, इथियोपिया, सूडान तथा मिस्र। इस विशाल नदी का सबसे दूरस्थ स्रोत है बुरूण्डी में स्थित कागेरा नदी।

नील नदी का निर्माण तीन मुख्य सरिताओं से होता है जिनमें शामिल हैं-(1) ब्लू नील, (2) अटबारा तथा (3) श्वेत (ह्वाइट) नील। ब्लू नील को अरबी भाषा में अलूबार या अलूअजराग कहा जाता है। अटबारा को अरबी भाषा में नार अटबारा कहा जाता है, जिसकी उत्पत्ति इथियोपिया की उच्च भूमि (हाईलैंड्स) में होती है। ह्वाइट नील को अरबी भाषा में अलूबार अलूअब्याद कहा जाता है जिसकी हेड स्ट्रीम (शीर्ष सरिता) लेक विक्टोरिया तथा अलबर्ट में आकर मिलती है।

'नील' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द 'निलौस' से हुई है, जिसका अर्थ है 'घाटी' या 'नदी घाटी'। प्राचीन काल के दौरान मिस्र के लोग इस नदी को अर् या और (Aur) कहते थे, जिसका अर्थ होता है 'काला' अथवा 'नीला'। इस नदी का ऐसा नाम रखे जाने का कारण यह था कि इस नदी द्वारा बाढ़ के समय ढोकर लाये जाने वाले अवसाद (सेडिमेंट) का रंग नीला रहता था। इस नदी द्वारा लाया गया काला या नीला अवसाद इस पूरे क्षेत्र में फैल जाता था। इसके कारण पूरा क्षेत्र नीले या काले रंग का दिखाई पड़ता था।

सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व महान यूनानी कवि होमर द्वारा लिखित प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ 'दि ओडिसी (भ्रमण महाकाव्य)' में नील नदी तथा मिस्र का नाम 'एजिप्टोस' बताया गया है। एजिप्टोस शब्द से ही मिस्र का अंग्रेजी नाम 'इजिप्ट' उत्पन्न हुआ है। आजकल मिस्र तथा सूडान में नील नदी को 'अल् नील

(Al Nile)' अलबहर (Al Bahr)' अथवा 'बहर अल् नील' कहा जाता है।

मिस्र तथा सूडान में नील नदी को "बहर अल् नील" कहा जाता है।

नील नदी घाटी, जो अफ्रीका महाद्वीप के लगभग एक तिहाई भाग में फैली हुई है, प्राचीन काल में एक उन्नत सभ्यता के उत्थान एवं पतन की साक्षी रही है। इस नदी के किनारे रहने वाले लोग सिंधु घाटी में रहने वाले लोगों के समान काफी प्राचीन काल से ही खेती करने लगे थे।

नील नदी घाटी वाले क्षेत्र के उत्तर में मेडिटेरेनियन सागर पूरब में लाल सागर तथा इथियोमिगन अधित्यका (प्लैटरो), दक्षिण में पूर्वी अफ्रीकी उच्च भूमि (हाई लैंड्स) जिसमें शामिल है, लेक विक्टोरिया जो नील नदी का स्रोत है तथा पश्चिम में नील, चाड तथा कांगो द्रोणी (बेसिन) के बीच स्थित जल प्रवाह क्षेत्र। यह क्षेत्र उत्तर से सूडान के मूर्रे पर्वत, मिस्र के अल् जिल्फ-अल् कबीर प्लैटो से होते हुए लिबियन मरूस्थल (जो सहारा मरूस्थल का एक भाग है) तक फैला हुआ है।

भूवैज्ञानिकों के मतानुसार आज से लगभग तीन करोड़ वर्ष पूर्व नील एक बहुत छोटी नदी थी, जिसका स्रोत 18 डिग्री अक्षांश से 20 डिग्री अक्षांश के बीच स्थित था। उस समय इसका मुख्य हेड स्ट्रीम वर्तमान अटबारा नदी में स्थित था। दक्षिण में स्थित थी विशाल जल प्रवाह प्रणाली (ड्रेनेज सिस्टम) जिसमें शामिल था विशाल 'लेक सड्ड'। एक भूवैज्ञानिक अनुमान के अनुसार आज से लगभग पच्चीस हजार वर्ष पूर्व विक्टोरिया लेक तक जाने वाली पूर्वी अफ्रीकी जल प्रवाह प्रणाली से उत्तर की ओर एक निकास (आउटलेट) विकसित हो गया जो अपना जल 'लेक सड्ड' की ओर भेजने लगा। इस झील में लम्बे समय तक अवसाद (सेडिमेंट) जमा होते रहने के कारण इसका जल स्तर धीरे-धीरे ऊपर उठता गया। इसके फलस्वरूप यह लेक लबालब भर गयी, जिसके कारण इसका पानी छलक (ओवरफ्लो) कर उत्तर की ओर प्रवाहित होने लगा। प्रवाहित होने वाले इस जल ने शीघ्र ही नदी का रूप धारण कर लिया तथा इसने नील प्रणाली के दो बड़े भागों को आपस में जोड़ दिया। इस प्रकार लेक विक्टोरिया से निकल कर भूमध्य सागर तक एक जल प्रवाह प्रणाली (ड्रेनेज सिस्टम) का निर्माण हो गया।

वर्तमान समय में नील नदी की द्रोणी (बेसिन) सात बड़े क्षेत्रों में पड़ती है, जिनमें शामिल हैं-(1) पूर्वी अफ्रीका की झील अधित्यका (लेक प्लैटो), (2) अल जबल, (3) ह्वाइट नील, (4) ब्लू नील, (5) अटबारा, (6) सूडान तथा मिस्र में खार्तून के उत्तर स्थित नील तथा (7) नील का डेल्टा।

पूर्वी अफ्रीका का लेक प्लैटो कई शीर्ष सरिताओं (हेड स्ट्रीम्स) तथा झीलों के उद्भव का क्षेत्र है। ये शीर्ष सरितायें तथा झीलें ह्वाइट नील को जल की आपूर्ति करती हैं। सामान्य तौर पर यह माना जाता है कि नील नदी के एक नहीं बल्कि अनेक स्रोत हैं। सबसे दूरस्थ शीर्ष सरिता (हेड स्ट्रीम) है 'कागेरी नदी' जो लेक तंग्यानिका के उत्तरी छोर के निकट बुरूंडी की उच्च भूमि (हाइलैंड्स) में उत्पन्न होती है तथा प्रवाहित होती हुई लेक विक्टोरिया में मिल जाती है। मुख्य नील (नील प्रौपर) का उद्भव लेक विक्टोरिया से होता है जो संसार में मीठे जल की दूसरी सबसे बड़ी झील है तथा जो लगभग 26800 वर्गमील क्षेत्र में फैली हुई है। हालांकि यह एक विशाल झील है, परन्तु यह एक छिछली झील है। नील नदी की उत्पत्ति इस झील के उत्तरी किनारे पर उगंडा में जिंजा नामक स्थान पर होती है। नील नदी यहां से निकलने के बाद उत्तर की ओर प्रवाहित होती हुई 'रिपन' जल प्रपात से गुजरती है। सन् 1954 में इस जल प्रपात पर एक बांध बनाया गया जिसे 'नालूबाले डैम' कहा जाता है। विक्टोरिया लेक से उत्पन्न तथा उत्तर की ओर बढ़ती इस नदी को 'विक्टोरिया नील' कहा जाता है। यह आगे चल कर 'लेक कांयोगा' नामक एक छिछली झील में घुसती है। दलदली वनस्पतियों से आच्छादित इस झील से निकलने के बाद नील नदी पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होने लगती है। फिर आगे चलकर 'कबालेगा' जल प्रपात से गुजरती हुई लेक अल्बर्ट में उत्तर से घुसती है। लेक विक्टोरिया के विपरीत लेक अल्बर्ट एक गहरी तथा संकरी झील है जो पहाड़ों से घिरी हुई है। यहां से निकलने के बाद नील नदी को 'अल्बर्ट नील' कहा जाता है।

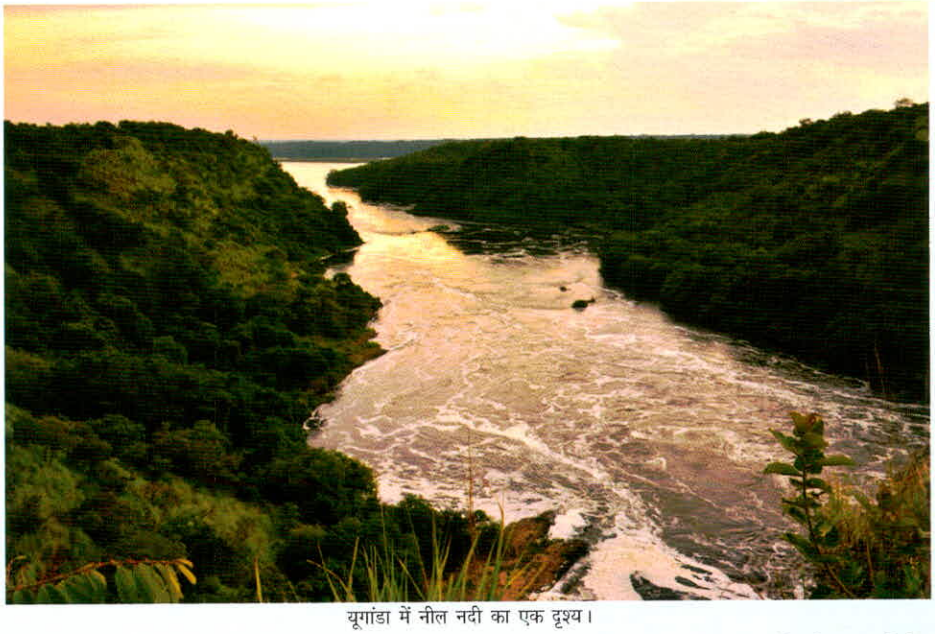

यूगांडा में नील नदी का एक दृश्य।

नील नदी निमुले नामक स्थान पर दक्षिणी सूडान में प्रवेश करती है। यहां से चलती हुई यह 120 मील की दूरी पर 'जुबा' नामक स्थान पर पहुंचती है, जहां लोग इसे 'अलजबल' नदी अथवा 'माउंटेन नील' के नाम से जानते

भूवैज्ञानिकों के मतानुसार आज से लगभग तीन करोड़ वर्ष पूर्व नील एक बहुत छोटी नदी थी, जिसका स्रोत 18 डिग्री अक्षांश से 20 डिग्री अक्षांश के बीच स्थित था। उस समय इसका मुख्य हेड स्ट्रीम वर्तमान अटबारा नदी में स्थित था। दक्षिण में स्थित थी विशाल जल प्रवाह प्रणाली (ड्रेनेज सिस्टम) जिसमें शामिल था विशाल 'लेक सड्ड'। एक भूवैज्ञानिक अनुमान के अनुसार आज से लगभग पच्चीस हजार वर्ष पूर्व विक्टोरिया लेक तक जाने वाली पूर्वी अफ्रीकी जल प्रवाह प्रणाली से उत्तर की ओर एक निकास (आउटलेट) विकसित हो गया जो अपना जल 'लेक सड्ड' की ओर भेजने लगा। इस झील में लम्बे समय तक अवसाद (सेडिमेंट) जमा होते रहने के कारण इसका जल स्तर धीरे–धीरे ऊपर उठता गया। इसके फलस्वरूप यह लेक लबालब भर गयी, जिसके कारण इसका पानी छलक (ओवरफ्लो) कर उत्तर की ओर प्रवाहित होने लगा। प्रवाहित होने वाले इस जल ने शीघ्र ही नदी का रूप धारण कर लिया

हैं। इस क्षेत्र में यह संकरी गहरी घाटियों तथा अनेक क्षिप्रिकाओं (रैडिड्स) से गुजरती है, जिनमें एक प्रमुख क्षिप्रिका का नाम है 'फूला रैडिड्स'। इस क्षेत्र में कई छोटी-छोटी सहायक नदियां इसमें मिलती हैं। जुबा से आगे बढ़ने पर यह नदी बहुत बड़े समतल क्षेत्र से गुजरती है। इस क्षेत्र में नील नदी की घाटी का ढलान बहुत कम हो जाता है, जिसके कारण धारा की गति बहुत घट जाती है। इसकी वजह से वर्षा ऋतु में प्राप्त होने वाला अतिरिक्त जल घाटी में स्थान नहीं पाता। नतीजा यह होता है कि जल पूरे क्षेत्र में फैल जाता है। इसके फलस्वरूप पूरा क्षेत्र जलीय पौधों से भर जाता है, जिसे सड्ड (Sudd) कहा जाता है, जिसका अर्थ है रूकावट तथा इस क्षेत्र को 'अलसड्ड' कहा जाता है।

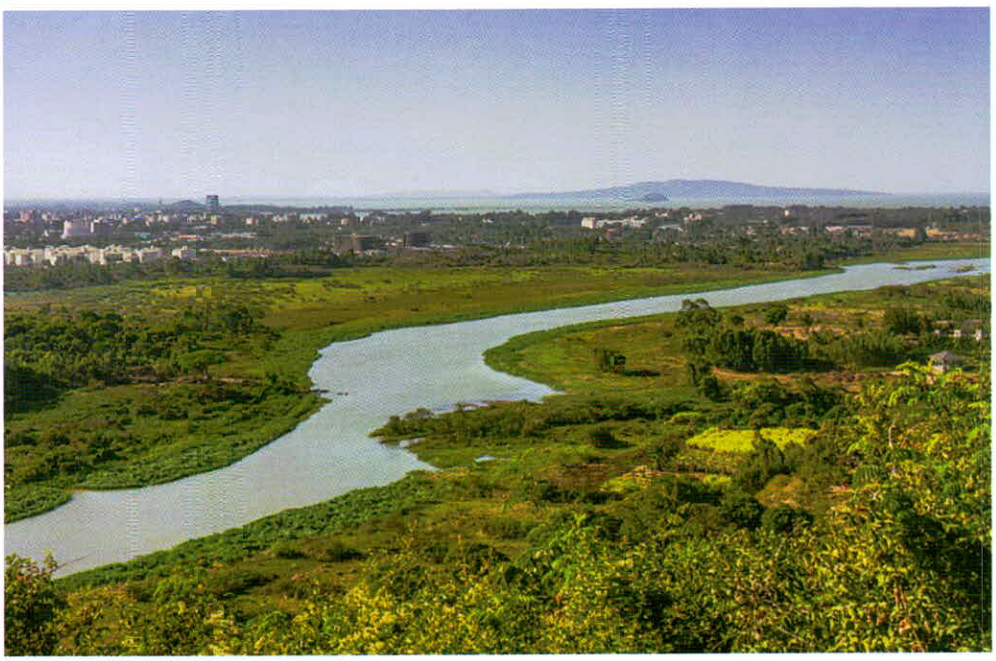

इथियोपिया में ब्लू नील नदी।

इस द्रोणी (बेसिन) में कई अन्य सरितायें आकर मिलती हैं। दक्षिणी सूडान के पश्चिमी भाग से 'अलगजल' नामक नदी आकर 'लेक नो' नामक स्थान पर 'अलजबल' में मिलती है। वस्तुतः 'लेक नो' एक विशाल समुद्र ताल (लैगून) है, जहां पर नदी की मुख्य धारा पूरब की ओर मुड़ती है। अलगजल का अधिकांश जल वाष्पीभूत हो जाता है तथा इसका बहुत कम अंश नील नदी में पहुंच पाता है। मालाकल नामक स्थान से कुछ पहले मुख्य नदी में 'सोबात' नामक सहायक नदी आकर मिलती है। सोबात को इथियोपिया में 'बारो' कहा जाता है। यहां से आगे बढ़ने पर इस नदी का नाम 'ह्वाइट नील' पड़ जाता है। लगभग 500 मील लम्बी ह्वाइट नील 'लेक नसर' में प्रवेश करने वाले जल के कुल आयतन के 15 प्रतिशत का ही योगदान देती है। ह्वाइट नील का उद्भव मालाकल नामक स्थान पर होता है तथा यह खार्तूम नामक स्थान पर ब्लू नील में मिल जाती है।

ब्लू नील का उद्भव काफी ऊँचे इथियोपियन प्लैटो से होता है, जहां यह समुद्र तल से लगभग छः हजार फीट की ऊँचाई से उतरकर उत्तर पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होती है। इसका स्रोत एक प्रसिद्ध झरना है, जिसे स्थानीय लोग काफी पवित्र मानते हैं। इस झरने से 'अबय' नाम की एक छोटी सरिता निकल कर 'लेक ताना' में पहुंचती है। 'लेक ताना' एक छिछली झील है जिसका क्षेत्रफल लगभग 1400 वर्ग मील है। लेक ताना से निकल कर अबय अनेक क्षिप्रिकाओं (रैपिड्स) को पार करती हुई गहरी घाटियों (गौर्जेज) से गुजरती है। कुछ दूर चलने के बाद अबय नदी पश्चिमोत्तर दिशा में मुड़ जाती है तथा सूडान के विभिन्न क्षेत्रों से गुजरती हुई खार्तूम के निकट ह्वाइट नील में मिल जाती है।

नील की अन्तिम सहायक नदी 'अटबारा' नील की मुख्य धारा में खार्तूम से लगभग 200 मील उत्तर जाकर मिलती है। अटबारा का उद्भव इथियोपिया में लेक ताना से उत्तर गौंडर नामक स्थान के निकट समुद्र तल से छः हजार फीट से दस हजार फीट की ऊँचाई के बीच होता है।

संपर्क करः
डॉ. विजय कुमार उपाध्याय
राजेन्द्र नगर हाउसिंग कॉलोनी, के.के. सिंह कॉलोनी, पो.-जमगोड़िया,
वाया-जोधाडीह, चास, जिला-बोकारो, झारखण्ड-827 013
मो. 9431323302, 9973539146